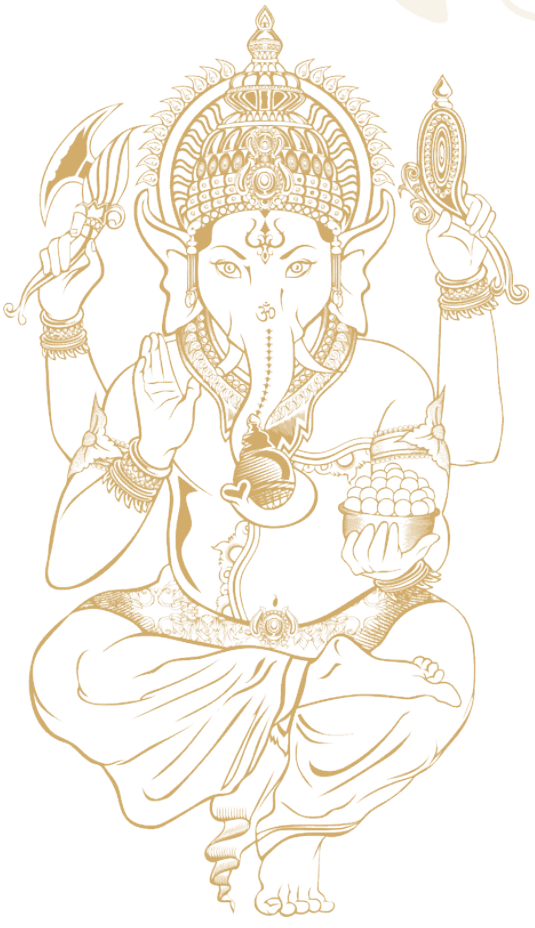

Mr.Vaibhav shrivastav

Sajal shirivastav

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119377707

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
27/10/1999	जन्म तिथि	30/09/2001
बुधवार	दिन	रविवार
घंटे 21:40:00	जन्म समय	13:53:00 घंटे
घटी 38:15:02	जन्म समय(घटी)	19:21:02 घटी
India	देश	India
Dabra	स्थान	Jhajhar
25:56:00 उत्तर	अक्षांश	28:16:00 उत्तर
78:20:00 पूर्व	रेखांश	77:40:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:16:40	स्थानिक संस्कार	-00:19:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:21:59	सूर्योदय	06:11:44
17:39:04	सूर्यास्त	18:06:33
23:51:01	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:36

विंशोत्तरी चन्द्र 3वर्ष 3मा 6दि		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी राहु 1वर्ष 7मा 28दि	
राहु		13:54:24	मिथु	लग्न	धनु	24:30:05	शनि	
02/02/2010		09:56:24	तुला	सूर्य	कन्या	13:22:04	30/05/2019	
02/02/2028		18:58:32	वृष	चंद्र	कुंभ	18:46:09	30/05/2038	
राहु	15/10/2012	13:52:47	धनु	मंगल	धनु	18:18:35	शनि	02/06/2022
गुरु	11/03/2015	03:50:31	वृश्चि	बुध	तुला	05:41:24	बुध	09/02/2025
शनि	15/01/2018	05:33:01	मेष व	गुरु	मिथु	20:03:24	केतु	21/03/2026
बुध	03/08/2020	23:29:14	सिंह	शुक्र	सिंह	17:26:50	शुक्र	20/05/2029
केतु	22/08/2021	20:38:34	मेष व	शनि व	वृष	21:04:57	सूर्य	02/05/2030
शुक्र	21/08/2024	14:52:54	कर्क व	राहु व	मिथु	07:29:49	चन्द्र	02/12/2031
सूर्य	16/07/2025	14:52:54	मक व	केतु व	धनु	07:29:49	मंगल	09/01/2033
चन्द्र	15/01/2027	19:01:14	मक	हर्ष व	मक	27:24:38	राहु	16/11/2035
मंगल	02/02/2028	07:47:20	मक	नेप व	मक	12:12:06	गुरु	30/05/2038
		15:08:46	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	19:02:56		

लग्न-चलित

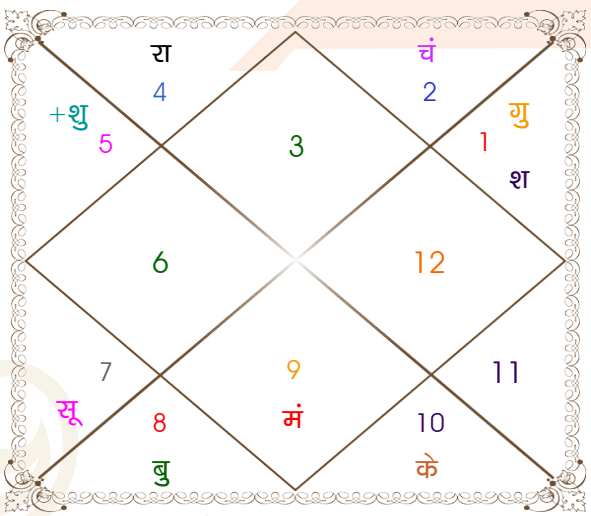

लग्न-चलित

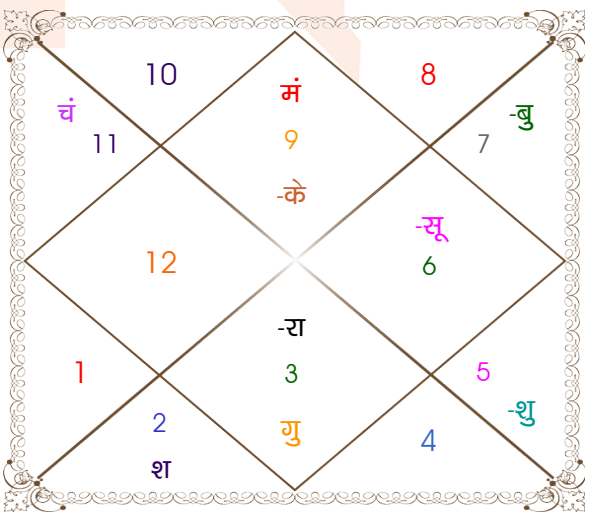

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सर्प	अश्व	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शनि	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृष	कुम्भ	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

Mr.Vaibhav shrivastav का वर्ग मृग है तथा ँरंस ीपतपअेंजंअ का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr.Vaibhav shrivastav और ँरंस ीपतपअेंजंअ का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr.Vaibhav shrivastav मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि Mr.Vaibhav shrivastav कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ँरंस ीपतपअेंजंअ मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु ँरंस ीपतपअेंजंअ कि कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ँरंस ीपतपअेंजंअ कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि Mr.Vaibhav shrivastav कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr.Vaibhav shrivastav तथा ँरंस ीपतपअेंजंअ में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।